Importance of the temples of Khajuraho in Ancient Indian Architecture

प्राचीन भारतीय वास्तुकला में खजुराहो के मंदिरों का महत्व

Navin Kumar
Professor
Dept. of A.I.H. & Archaeology,
Patna University, Patna-800005

P.G. / M.A. IInd Semester,

Dept. of A.I.H. & Archaeology. Patna University

Paper- C.C.-9, ANCIENT INDIAN ART, ARCHITECTURE AND ICONOGRAPHY

खुजराहो चन्देलवंशी राजाओं की राजधानी थी। यहॉ इन राजाओं के शासन काल में अनेक मंदिरों का निर्माण हुआ। ये मंदिर प्राचीन भारतीय स्थापत्य कला में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। 950 ई0 से 1050 ई0के बीच केवल 100 वर्षों की अवधि में, वह भी एक सीमित क्षेत्र में, 30 मंदिरों का निर्माण खजुराहो में हुआ। जबकि इसके विपरीत उड़ीसा के मंदिरों का निर्माण एक लम्बे समय तक चलता रहा। इन मंदिरों का निर्माण काल 8 वीं शताब्दी से लेकर 13 वीं शताब्दी तक है। यह भी उल्लेखनीय है कि उड़ीसा के मंदिर किसी एक ही स्थान में नहीं बने हैं बल्कि उड़ीसा के विभिन्न स्थानों से मिले हैं। थोड़े समय में इतने भव्य मंदिरों का निर्माण आश्चर्य का विषय है।

खजुराहो के मंदिरों में 10 शैव समप्रदाय के हैं। 10 वैष्णव सम्प्रदाय के हैं और 10 जैन धर्म के हैं। अर्थात तीन विभिन्न धार्मिक विश्वास से संबंधित ये मंदिर है और प्रत्येक धर्म के दस मंदिर है। इस समता के आधार पर कहा जा सकता है कि शैवमतावलम्बी चन्देलवंशी नरेशों ने केवल धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाई बल्कि सही अर्थों में सभी धर्मों को बराबरी का दर्जा दिया। इन मंदिरों के निर्मित हुए लगभग हजार वर्ष बीत गए परन्तु आज भी ये मंदिर पूरी दृढता के साथ अपने मूलरूप में खड़े हैं और उनके शिखर, अपने स्थान पर

वर्तमान है। सामान्यतया ये मंदिर नागर शैली के हैं, परन्तु इनकी कला–प़्द्वति मौलिक है।

खजुराहो के मंदिर चाहरदीवारी से घिरे नहीं है इसलिए इसमें आंगन की व्यवस्था नहीं है। इसके विपरीत उड़ीसा के मंदिर परकोटे से घिरे हैं। खजुराहो मंदिर उॅचे चबूतरे पर निर्मित है। इस पर जाने के लिए सीढ़ियों की व्यवस्था है। इन मंदिरों की निर्माण योजना का पूर्ण विकसित रूप कन्दरीय महादेव मंदिर में प्रकट होता है। इस मंदिर के छह भाग हैं–अर्द्वमंडप, मंडप, महामंडप, अन्तराल, गर्भगृह तथा प्रदक्षिणा पथ। अर्थात गर्भगृह के आगे महामंडप बना है और दोनों को जोड़ने वाला एक कक्ष की व्यवस्था है जिसे अंतराल कहते हैं। महामंडप के बाद मंडप बना है और सबसे आगे अर्द्वमंडप बना है। महामंडप वस्तुतः गर्भगृह, अंतराल, तथा मंडप से संलग्न पार्श्वरूप का कार्य करता है। अतः सर्वप्रथम अर्द्वमंडप में प्रवेश करना पड़ता है फिर मंडप, महामंडप तथा अन्तराल होते हुए गर्भगृह में प्रवेश करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त प्रदक्षिणा पथ की भी व्यवस्था खजुराहो मंदिरों में मिलती है। वस्तुतः इन मंदिरों में तीन प्रमुख अंग गर्भगृह, मंडप तथा अर्द्वमंडप की ही योजना है।

खजुराहो मंदिर उॅचे चबूतरे पर खड़े है, इसलिए ये भवन तीन मुख्य भागों में बॅट जाते हैं। एक तो उॅचा आधार, दूसरा उस पर बने दीवार तथा भीतर के कोष्ठों में जाने के लिए द्वार, जबकि तीसरा अंग छतों का वर्ग है जो उॅचा तथा सुन्दर शिखरों में परिवर्तित होता है। प्रत्येक मुख्य खंड का अपना अलग शिखरयुक्त छत है। सबसे कम उॅचा छत अर्द्वमंडप पर बना है उससे उॅचा मंडप पर और इसी क्रम में सबसे उॅचा गर्भगृह पर बना है। साधारणतया मंडप 25 फूट के वर्ग का आकार का है। इसका छत चूकिं भारी है इसलिए इसे सहारा देने के लिए बीच में चार स्तम्भ की योजना की गई है।

इन मंदिरों के भीतरी और बाहरी भाग अलंकृत है जबकि उड़ीसा के केवल वाह्य भाग ही अलंकृत है। खजुराहो के मंदिरों के वाह्य एवं अन्दर दोनों

भागों के अलंकरण में विभिन्न प्रकार की ज्यामितिक आकृतियॉ, पुष्प एवं पत्र, मनुष्य आकृतियॉ, देवी–देवताओं की आकृतियॉ तथा साथ ही साथ उड़ीसा के मंदिरों के समान अशलील मूर्तियों का उपयोग किया गया है। मंदिरों के वाह्य भाग में उभरी मानव मृतियॉ अत्यन्त सजीव है। इनमें से कुछ महापुरूषों की और कुछ देवी देवताओं की है। शिल्पियों ने इनकी रचना मूर्तिकला के सिद्वान्तों के अनुरूप की है। इतनी सजीव एवं मनोहारी मूर्तियॉ भारतवर्ष के कुछ ही मंदिरों में दिखती है।

खजुराहो मंदिरों का मूल्यांकन विभिन्न मंदिरों की अलग अलग चर्चा किए बिना पूर्ण नहीं हो सकता। इसलिए यहॉ के प्रमुख मंदिरों की चर्चा आवश्यक है। शैव मंदिरों में कंदरिया महादेव, विश्वनाथ और कुॅवर मठ मंदिर उल्लेखनीय है। वैष्णव मंदिरों में लक्षमण मंदिर, चर्तुभुजी मंदिर, देवी जगदम्बा मंदिर, वामन मंदिर, वराह मंदिर महत्वपूर्ण है। अन्य हिन्दू देवी देवताओं की उपासना के लिए बनाए गए मंदिरों में ब्रम्हा, चित्रगुप्त, दुर्गा, पार्वती, चौसठ योगिनी आदि महत्वपूर्ण है तथा जैन मंदिरों में जिननाथ मंदिर, पार्श्वनाथ मंदिर तथा घटई मंदिर प्रमुख है।

कंदरिया महादेव मंदिर खजुराहो शैली की सर्वोत्कृष्ट रचना है। इसका निर्माण 10वीं शताब्दी में हुआ है। बाहर से यह 109 फुट लम्बा तथा 60 फुट चौड़ा है। धरातल से इसकी उॅचाई 116½फुट है। कपितय पुरातत्ववेत्ता इसे केवल 100 फुट लम्बा मानते हैं। इसके चबूतरे की उॅचाई 13 फुट है जिस पर जाने के लिए सीढ़ियॉ की व्यवस्था है।

यह मंदिर गुणनाकृति योजना में नियोजित है जिसमें दोहरी भुजाएॅ है। इसमें अर्द्वमंडप, मंडप, महामंडप, गर्भगृह तथा प्रदक्षिणा पथ की योजना है। इनका तथा इनपर बने शिखर की योजना उपर दिए गए खजुराहो शैली की विशेषता की तरह ही है। खजुराहो शैली के मंदिरों मे ंसाधारणतया एक ही प्रवेश द्वार की योजना दिखाई पड़ती है परन्तु इस मंदिर में दो प्रवेश द्वार है।

इसकी चौखटों पर मेहराव बने हैं। आयताकार बरामदा अथवा अर्द्धमंडप चारों ओर से खुला है। इससे उपर का छत स्तम्भों पर आश्रित है। मंडप के केन्द में ही चार स्तम्भ है जिनपर खड़ा है और जो छत का भार वहन करता है। अंतराल तथा मंडप से संलग्न महामंडप है जो इनके पार्श्व का कार्य करता है और जिसमें बालकोनी की खिड़कियॉ खुलती है। यह महामंडप तीन दिशाओं से खुला है। अंतराल के निकट चन्द्रशील अथवा अर्द्धचन्द्राकार सोपान है। इस मंदिर के स्तम्भों का अलंकरण उल्लेखनीय है। मंदिर के अन्दर का भाग अलंकृत है। वाह्य भाग भी अलंकृत है। अन्दर–बाहर का अलंकरण खजुराहो शैली की विशेषता है।

कंदरिया महादेव मंदिर वस्तुतः एक पंचायतन मंदिर था। किन्तु इसके अन्य चार देवालय, जो चारों कोने पर निर्मित थे, नष्ट हो गये हैं। मंदिर का अलंकरण खजुराहो की विशेष शैली में है। ये मूर्ति शिल्प की चरम परिणति है। इस शैली के अन्य मंदिरों में न तो इतना अंलकरण है और न तत्वंगी मूतियॉ ही है।

कंदरिया महादेव मंदिर की शैली पर ही निर्मित विश्वनाथ मंदिर 87 फुट लम्बा तथा 46 फुट चौड़ा हैं इसके चारों कोने पर एक एक पूरक देवालय है जो इस मंदिर को पंचायतन मंदिर का रूप देते हैं। इसकी निर्माण योजना पूर्ववर्त प्रायः पॉच अंगो वाली है। गर्भगृह में शिवलिंग भी है। इस मंदिर से प्राप्त एक लेख के अनुसार इसका निर्माण 1000 ई0 में हुआ था। इसके मंडप में लगे स्तम्भों का अलंकरण पद्वति मौलिक है।

कुॅवरमठ मंदिर बाहर से 66 फुट लम्बा और 33 फुट चौड़ा है। इससें भी पॉच अंगों की योजना है। इसके छत की अलंकरण पद्वति विशिष्ट है। छत के निर्माण में एक के बाद दूसरा प्रस्तरखंड इस प्रकार अवस्थित है कि इसे वृत क्रमशः उपर की ओर छोटे होते गए हैं। अन्य मंदिरों की तरह इसमें छोटे वृत

विभक्त नहीं है। स्थापत्य विशेषता के कारण इसकी गणना खजुराहो के सुन्दर मंदिरों में होती है।

कंदरिया महादेव मंदिर शैली में निर्मित चतुर्भुज मंदिर भी एक पंचायतन मंदिर है। इसकी लम्बाई 85 फुट और चौड़ाई 44 फुट है। इसकी समता विश्वनाथ मंदिर के साथ की जा सकती है। पॉच अंगों की योजना इसमें भी है। प्रत्येक देवालय के सामने दो स्तम्भों पर आश्रित छोटे बरामदे हैं। इस मंदिर में अलंकरण की बहुलता है।

देवी जगदंबी मंदिर 77 फुट लम्बा और 50 फुट चौड़ा है। इसकी योजना सरल है और इसमें केवल चार ही खंड है तथा प्रदक्षिणा पथ का अभाव है। इसके अर्द्वमंडप में अथवा बरामद में दो की अपेक्षा एक ही कक्ष है।

वामन मंदिर 60 फुट 3 इंच लम्बा तथा 38 फुट 9 इंच चौड़ा है। इसमें मूर्तियों की संख्या कम है तथा अलंकरण साधारण कोटि का है। बराह मंदिर का आकार काफी छोटा है। यह 20 फुट लम्बा तथा 16 फुट चौड़ा है। इसके प्रत्येक कोण में तीन तीन स्तम्भ है तथा पश्चिम की ओर दो स्तम्भ हैं इन स्तम्भों की व्यवस्था ऐसी है कि एक मार्ग बन गया है। ये स्तम्भ ही छत का भार वहन करते हैं। इसकी छत वर्गाकार पत्थरों को एक के उपर एक रखकर बनाई गई है। 38 फुट लम्बा और 26 फुट चौड़ा लक्ष्मण मंदिर, खजुराहो शैली की प्रारंभिक रचना है। बाद में इसी शैली में पार्श्वनाथ और चित्रगुप्त मंदिरों का निर्माण हुआ।

चौसठ योगिनी मंदिर 25 फुट उॅचे चबूतरे पर खड़ा है। यह 102 फुट लम्बा तथा 60 फुट चौड़ा हैं इसकी चारों दीवारों पर अनेक कोठरियॉ बनी है और पिछली दीवार के बीच एक बड़ी कोठरी है। इसमें लकड़ी के दोहरे दीवार लगे थे। प्रत्येक कोठरी की छत उपर की ओर संकीर्ण होकर शिखर के रूप में परिणत हो गई है। इस प्रकार प्रत्येक कक्ष की योजना एक देवालय के रूप में

की गई है। प्रत्येक छोटे कक्ष में एक योगनी की मूर्ति थी और बड़ी कोठरी में अष्टभुजी देवी की। यह खजुराहो का प्राचीनतम मंदिर प्रतीत होता है।

खजुराहो के जैन मंदिरों की वास्तु शैली ब्राह्मण मंदिरों से भिन्न है। इनमें केवल मंडप, अन्तराल और गर्भगृह है। तीनों एक ही आकार–प्रकार के बने हैं। जैन मंदिरों के प्रत्येक अष्टकोण स्तम्भों में तीन दीवारगीरें है। इस प्रकार कुछ 24 तीर्थकरों की मूर्तियाॅ रखने के लिए किया गया है। इन मंदिरों के शिखर छोटे आकार के हैं तथा प्रकाश छिद्र का अभाव है।

जैन मंदिरों में सुन्दरतम तथा विशाल जिननाथ मंदिर है। यह 60 फुट लम्बा और 30 फुट चौड़ा है। इसमें तीन ही अंग है। अन्य जैन मंदिरों से इनका वास्तु विन्यास विलक्षण हैं मंदिर के अन्दर एक आयताकार कक्ष है जो दो खण्डों में विभक्त होकर गर्भगृह और स्तंभयुक्त बरामदे का रूप ग्रहण करता है। इन दोनों कक्षों के चारो ओर प्रदक्षिणा पथ है। मंदिर का वाह्य भाग अलंकृत है।

पार्श्वनाथ मंदिर नष्टप्रायः है जिसका केवल गर्भगृह मात्र ही शेष हैं इसमें भी तीन ही अंग है। सम्पूर्ण मंदिर और गर्भ गृह में 23वें तीर्थकर पार्श्वनाथ की एक मूर्ति है।

घटई मंदिर भग्नावस्था में है। यह 43 फुट लम्बा और 22 फुट चौड़ा है। इसके चबूतरा की लम्बाई चौड़ाई इससे थोड़ी अधिक है जो भी अवशेष इस मंदिर के बचे हैं उससे यह स्पष्ट होता है कि जब यह मंदिर पूर्ण रहा होगा तो अपने प्रकार का एक रत्न होगा। अपने समय के अत्यन्त कुशल शिल्पियों द्वारा इसकी रचना हुई होगी। अब केवल 14 फुट उॅचे 12 स्तम्भ वर्तमान है जो एक 45 फुट लम्बे तथा 25 फुट चौड़े बरामदे पर खड़े हैं।

अतः खजुराहो शैली अपनी विशेषता रखती है। इस शैली की अंतिम रचना दुलादेव मंदिर मानी जाती है। चन्देलों के शासन काल के अन्त के साथ ही इस शैली का अन्त नहीं हो गया, बल्कि रेवा राज्य के मरीबाग के निकट

स्थित विश्वनाथ मंदिर इस बात की पुष्टि करता है कि यह शैली बाद में भी राजस्थान में जहाॅ तहाॅ साॅस ले रही थी।